प्रकरण जोगमायानूं

मारा सुंदरसाथ आधार, जीवन सखी वाणी ते एह विचारोजी।
जागनीसूं जगवुं तमने, ते साथजी कां न संभारोजी।। १ ।।

हे मेरे जीवन के आधार सुन्दरसाथजी! इस वाणी को विचार कर देखो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से तुमको जगाती हूं। तुम क्यों नहीं इसे याद करते?

वाणी मांहें न आवे केमे, जोगमायानी विधजी।
तोहे वचन कहूं तमने, लीला अमारी निधजी।। २ ।।

योगमाया की हकीकत किसी तरह से भी कहने में नहीं आती। फिर भी यह लीला हमारी न्यामत है, इसलिए वचनों से तुमको कुछ कहती हूं।

अमें जोऊं वृंदावन इहां थकी, रमूं वालाजी साथ जी।
करूं ते रामत नित नवी, वन मांहें विलासजी।। ३ ।।

मैं वृन्दावन को यहां से देखूं और वालाजी के साथ खेलूं। नित्य नए-नए खेल करके वन में आनन्द करें।

जोगमायानी क्यांहें न दीसे, अम विना ओलखाणजी।
वासना पांचे अछरनी, भले कहावे आप सुजाणजी।। ४ ।।

हमारे अलावा किसी ने भी योगमाया को नहीं देखा। इसकी पहचान हमें है। अक्षर की पांच वासनाएं भले समझदार कहलाती हैं, पर उनको भी इस अखण्ड रास का ज्ञान नहीं है।

ए मायाओ अमतणी, ऐहेना अमकने विचारजी।
बीजा सहुए एहेना उपायल, ए अमारी अग्याकारजी।। ५ ।।

यह माया हमारी है और इसकी हकीकत भी हमारे पास है। दूसरे सभी इससे बनाए गए हैं और हमारी आज्ञा के यह आधीन है।

पेहेले फेरे रास रामतडी, जे कीधी वृन्दावनजी।
आनंदकारी जोगमाया, अविनासी उतपनजी।। ६ ।।

पहले फेरे में वृन्दावन में रास की रामत को खेला। यह आनन्दकारी योगमाया में अखण्ड है।

जोगमायानी जुगत एहेवी, एक रस एक रंगजी।
एक संगे रहेवुं सदा, अंगना एकै अंगजी।। ७ ।।

योगमाया की हकीकत ऐसी है कि वहां सदा एक रस, एक आनन्द, एक साथ रहना है। वहां धनी और अंगना एक ही स्वरूप हैं।

आतम सदीवे एक छे, वासना एकै अंगजी।
मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंडना रंगजी।। ८ ।।

हम सबकी आत्मा एक है। हम सब एक श्यामाजी के ही अंग हैं। श्री राजजी का मूल आवेश योगमाया के तन (बांकेबिहारी) में आया जो अखण्ड सुख के ही स्वरूप हैं।

Nijanand App

एक अंगे रंगे संगे, तो अंतरध्यान थाय केमजी।
ए सब्द मां छे आंकडी, ते करी दऊं सर्वे गमजी।। ९ ।।

अब सवाल है कि जब धनी और अंगना एक ही रंग में रंगे, एक संग एक तन हैं, तो अन्तर्ध्यान कैसे हो सकते हैं? इस शब्द में आंकड़ी (गुत्थी) है। इसकी मैं पूरी पहचान करा देती हूं।

आंकडी अंतरध्याननी, साथ तमने कहूं सनंधजी।
अम विना ए कोण जाणे, तारतमना बंधजी।। १० ।।

अन्तर्ध्यान की आंकड़ी की हकीकत मैं तुमको कहती हूं। हमारे बिना इसको कौन जान सकता है? यह ज्ञान के बन्धन हैं।

आवेस लइने जगवया, त्यारे पाम्या अंतरध्यानजी।
विलास विरह चित चोकस करवा, संभारवा घर श्री धामजी।। ११ ।।

श्री राजजी ने अपना आवेश जैसे ही वापस खींचा (अक्षर ब्रह्म को यह सुध देने के लिए कि यह लीला योगमाया में है न कि परमधाम में और हमें यह सुध देने के लिए कि हम धनी के साथ नहीं अक्षर की आतम के साथ लीला कर रही हैं) तो हमें देख धनी अन्तर्ध्यान हो गए। यह धनी ने घर की याद दिलाने के लिए विलास की लीला में विरह देकर हमें सावचेत (सावधान) किया।

जुगत जोगमाया तणी, बीजो न जाणे कोयजी।
बीजो कोई तो जाणे, जो अम विना कोई होयजी।। १२ ।।

योगमाया की हकीकत को हमारे बिना कोई नहीं जानता। दूसरा तो तब जाने जब हमारे बिना कोई दूसरा हो, अर्थात् हमारे बिना कोई और है भी नहीं।

जोगमायाए जागृत थाय, जल भोम वाय अगिनजी।
पसु पंखी थावर जंगम, तत्व पांचे चेतनजी।। १३ ।।

योगमाया में पृथ्वी, जल, भूमि, हवा, अग्नि सभी जागृत हैं, अर्थात् इनका लय नहीं होता। यहां के पशु-पक्षी, चल और अचल तथा पांचों तत्व सभी चेतन हैं (इनका नाश नहीं होता)।

सुतेज ससि वन पसु पंखी, तत्व पांचे सुतेजजी।
सुतेज सर्वे जोगवाई, सुतेज रेजा रेजजी।। १४ ।।

चन्द्रमा, वन, पशु-पक्षी, पांचों तत्व वहां की सामग्री और कण-कण चेतन हैं।

हेम जवेरना वन कहूं, तो ए पण खोटी वस्तजी।
सत वस्त ने समान नहीं, न केहेवाय मुख न हस्तजी।। १५ ।।

सोने या जवाहरात (जवेर) का वन कहूं तो यह झूठी उपमा है। सत वस्तु से समानता (तुलना) नहीं होगी। इनका बयान लिखने में या कहने में नहीं आता।

एक पत्रनी वरणव सोभा, आंणी जिभ्याए कही न जायजी।
कै कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पत्र हेठे ढंकाय जी।। १६ ।।

एक पत्ते की शोभा भी इस जबान से नहीं कही जा सकती। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा एक पत्ते के तेज में ढक जाते हैं।

Nijanand App

ए भोमनी रेत रंचकने, समान नहीं सूर कोटजी।
द्रष्टे कांई आवे नहीं, एक रंचक केरी ओटजी।। १७ ।।

इस भूमि की रेत के एक कण के सामने करोड़ों सूर्य भी नहीं टिकते। रेत के एक कण की आड़ में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता, इतना तेज है।

हवे ते भोमना वस्तर भूषण, वचने केम कहूं मुखजी।
मारा घरनी हसे ते जाणसे, अम घरतणां ए सुखजी।। १८ ।।

इस भूमि के वस्त्र और आभूषणों का यहां की जुबान से कैसे वर्णन करूं? जो हमारे घर के होंगे वही जानेंगे। यह हमारे घर के सुख हैं।

सुन्दरता सिणगार सोभा, वचने न केहेवायजी।
तो सरूपना जे सुखनी वातों, लवो केम बोलायजी।। १९ ।।

यहां की सुन्दरता और शृंगार की शोभा वचनों से कहने में नहीं आती, तो यहां के स्वरूपों के सुख की बातों का अंश मात्र भी कैसे कहा जाए?

भोमनी किरणो वननी किरणो, किरणा ससि प्रकासजी।
ते मांहें अमे रमूं प्रेमें, पिउसों रंग विलासजी।। २० ।।

यहां की भूमि की, वन की, चन्द्रमा की किरणों के प्रकाश में हम बड़े आनन्द के साथ पियाजी के साथ खेले।

ए रामत रास रमी करी, अमे आव्या सहु घर धामजी।
ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, रुदे कीधो अखंड ठामजी।। २१ ।।

रास की रामत खेलकर हम सब अपने घर परमधाम आए और रास लीला का पतन करके सबलिक ब्रह्म (अक्षर के चित्त) में अखण्ड कर दिया।

अमें अमारे धाम आव्या, अछर पोताने घेरजी।
अखंड रजनी रास रमाय, रामत एणी पेरजी।। २२ ।।

हम अपने घर परमधाम आए। अक्षर अपने घर अक्षर धाम गए। अखण्ड रात्रि में इस तरह रास खिलाकर लीला अखण्ड की।

वृज रास मांहें अमें रमूं, आंही पण अमें आव्याजी।
श्री धाम मधे बेठा अमे, जोऊं छूं आ मायाजी।। २३ ।।

ब्रज रास में हम खेले। यहां पर भी हम आए हैं। हम परमधाम में बैठकर माया का खेल देख रहे हैं।

वृज रास देखाडिया, रमया ते अनेक पेरजी।
विलास विरह बंने भोगवी, आव्या ते आपणे घेरजी।। २४ ।।

ब्रज रास का खेल दिखा करके अनेक तरह के खेल खिलाकर विरह और विलास के दुःख और आनन्द का अनुभव कर अपने घर आए।

Nijanand App

सुख दुख बंने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी।
ते माटे वली सत सरूपे, मंडल रचियो एहजी।। २५ ।।

दुःख और सुख दोनों तुमने देखे, फिर भी अभी कुछ बाकी है, ऐसा संशय बना रहा। इसलिए सत स्वरूप ने (अक्षर के मन का अव्याकृत स्वरूप) इस कालमाया के ब्रह्माण्ड को बनाया।

ए रामत रची अम कारणे, अमे कारज एणे आव्याजी।
बंनेना मनोरथ पूरवा, अमे रचावी आ मायाजी।। २६ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया और हमारे ही वास्ते धनी आए। हम दोनों (ब्रह्म सृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की चाहना पूर्ण करने के लिए हमने माया को बनवाया।

संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी।
ते जोऊं अमे अलगा रही, नहीं जोवावालो कोई अनजी।। २७ ।।

संसार सपने का बनाया और हमें भी सपने में ही दिखाया। जिसे हम अलग रहकर देख रहे हैं। हमारे सिवा दूसरा कोई देखने वाला नहीं है।

रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी।
तारतम बुधे प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी।। २८ ।।

सुन्दरसाथ को अच्छा खेल, अच्छी तरह दिखाया और जागृत बुद्धि तारतम से ज्ञान देकर हमारे मन की चाहना मिटाई।

रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी।
सहु मांहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी।। २९ ।।

हमने माया का जो खेल देखा है, यह भी अखण्ड हो जाएगा और यह संसार सब में श्रेष्ठ हो जाएगा।

भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी।
अमे जागसूं सहु एकठा, ज्यारे जासूं अमारे घरजी।। ३०।।

अक्षर भगवान भी जागृत होने के लिए तैयारी में हैं, परन्तु हम दोनों इकट्ठे जागकर घर जाएंगे।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ३२५ ।।

दयानूं प्रकरण

हो वालैया हवे ने हवे, दसो दिस तारी दया।
ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! अब तो दसों दिशाओं में आपकी ही दया दिखायी पड़ती है। आपका यह अहसान कैसे भुलाया जा सकता है कि आपने मेरे से ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है।

हवे तो गली हूं दया मांहें, सागर सरूपी खीर।
दया सागर सकल पूरण, एक टीपू नहीं मांहें नीर।। २ ।।

अब तो आपकी दया में ही डूबी हूं। यह मेहर आपका दूध का सागर है। ऐसी मेहर का सागर हर तरह से पूर्ण है। इसमें नीर अर्थात् माया का लेश मात्र भी नहीं है।

Nijanand App